

The Grasshopper and the Ant



F
Z
G
J
S
H

THE GRASSHOPPER AND THE ANT

One Summer's day a Grasshopper was singing. An Ant passed by him, "Who was working hard for the winter. Why not come and chat with me," said the Grasshopper. "I am helping to lay up food for the winter," said the Ant, "and recommend you to do the same."

"Why bother about winter?"

said the Grasshopper;

"We have got plenty of food at present." The Ant ignored him.

When the winter came the Grasshopper had





no food and found itself dying of hunger, while it saw the ants distributing everyday corn and grain from the stores they had collected in the summer. So, he asked the ants to help him by giving some food to eat. The



ants gave him some food and told him to work hard and save food for the winters. Thus, the grasshopper learnt a lesson.

Moral of the story: Work today and you can reap the benefits tomorrow.



অ

স

স্বী

য়া



ফৰিঙ আৰু পৰুৱা

অতি শীতল এটি ৰাতিপুৱা। সেইদিনাৰ ৰাতিপুৱাটো আছিল অতি আশ্চৰ্যনৈৱৰ্তক। পৰুৱা এটাৰ একো কাৰণ বন বিচাৰি নাপাই তাৰ উঁৰাল ঘৰৰ মুখতে এখন আপন লাৰি লৈ জুপুকা মাৰি বহি আছিল। কিনকিনীয়া বৰষুণ দি আছিল বাবে সি বাহিৰলৈ যাবৰ স্মন কৰা নাছিল। এনেতে এটা ফৰিঙ জপং জপংকৈ আহি তাৰ সন্মুখত আহি থিয় হ'ল। সি পৰুৱাটোক সুধিলে - "তোমাৰ উঁৰালৰ পৰা মোৰ বাবে অনলপমান পোৱা বস্তু দিব পাৰিবানে?" আজি আমাৰ ঘৰত খাবলৈ খুদকন এটিও নাই।

পৰুৱাটোই তাক সুধিলে - "কিয়ং তুমি শীতকালত খাবলৈ বুলি উঁৰালত একো জোটা হৈ নথলা লেকি?" ফৰিঙটোই পাতলকৈ উত্তৰ দিলে - কাৰণ থকাৰ বাবে



সন্ময়ে নাপালোঁ । সেইকাৰণে একো গোটাৰ বৰ নহ'ল ।
 ফৰিঙৰ উত্তৰটো শুলি পৰুৱাটো বৰ আচৰিত হ'ল ।
 ইমানবোৰ তেল-তেল বতৰ পানা, কিমান দিন সাহ
 গুচি গ'ল । অমচ তুমি একোকে জমা নকৰিলা । সেই-
 দিনবোৰত তুমি কি কৰিছিলি ? তেতিয়ানো তুমি কি
 কামত ইমান ব্যস্ত আছিলি যে জনপ সমস্যা আজিবি নাপালি
 ফৰিঙ ক'লে - " ধূনীয়া দিনবোৰত মই
 অত - তত গীত গাই ফুৰিছিলোঁ, ইফালে-সিফালে
 উৰিও ফুৰিছিলোঁ । গতিকে ক'ত আজিবি সমস্যা পায় ?

পৰুৱাৰ খঙে সুৰৰ হুলিৰ আগ পালেগৈ । সি গুৰু তেহকত ক'লে - " মোৱাগৈ এতিয়াও গীত গাই
 ফুৰিবা, অত - তত উৰি ফুৰিবা । একো নাপালেও হ'ব । এইবুলি কৈ পৰুৱাই ফৰিঙক বাহিৰতে এৰি থৈ
 উঁৰাল ঘৰৰ দুৱাৰখন ডিঙৰৰ পৰা জপাই দি সোমাই থাকিল । কিন্তু পিছত পৰুৱাই ফৰিঙক জনপ
 প্ৰাদ্য দিলে ।

নীতি শিক্ষা : সময়ৰ কাম সদায় সময়ত কৰিব লাগে ।

ਦੇਖੋ
ਇਹ

टिड्डा और चिंटी

गर्मी के दिन थे। एक जगह एक मैदान में एक टिड्डा यहाँ वहाँ कूद रहा था और फुंदाक रहा था। और काफी चटक रहा था। वह बहुत मस्ती में था और साना गाले हुए आँसू बंदू रहा था। अचानक एक चिंटी उसके सामने से गुज़री। उसने देखा की वो चिंटी एक सक्के के दाने को लुढ़कते हुए ले जा रही है और उसे अपने घर में ले जाने का प्रयास कर रही है।

यह देखकर टिड्डा बोला, "तुम क्यों ना मेरे पास आओ और मुझसे बात करो बजाए इतनी मेहनत और कठिन कार्य करने के।" तब चिंटी ने कहा, "मेरे ठंड के लिए खाना जमा कर रही हूँ और मैं तुम्हें भी यहीं सलाह दूँगी की तुम भी खाना जमा कर लो।" टिड्डा ने कहा, "ठंड को आने से तो अभी काफी समय है। उसकी चिंता अभी से क्यों करनी। मेरे पास अभी के लिए पर्याप्त खाना है।"



चींटी वहाँ से चली गई और उसने अपना काम जारी रखा। टिट्टू हर दिन उस चींटी को खाना जमा करते हुए देखता पर उसने खुद अपने लिए काम करने की नहीं सोची। अखिरकार ठंड के दिन आ रही गये। टिट्टू तब सूख से बेहान हो गया और ढाने ढाने का मौहताज हो गया। इसके उलट चींटी के पास खाने का भंडार था जो उसने गर्मी के सीजन में अपने लिए जमा किए हुए थे। वह अपने घर से आराम से जमा किए हुए खाने से समय बिताने लगी। यह देखकर टिट्टू को भी अपनी गलती का एहसास हुआ। और सोचने लगा की अगर उसने भी समय रहते अपने लिए खाना जमा कर लिया होता तो उसे आज ढाने ढाने का मौहताज नहीं होना पड़ता।

शिक्षः- आज जो कार्य करोगी
 उसका फल तुम्हें
 कल के दिन अवश्य
 मिलेगा।



ॐ

पा

ली

फट्याडग्री र कमिला

शरद मसमका समयमा, दिउँसाँका नातो घाममा एक कमिलाका परिवार काम गर्दै थिए। उनीहरू खेल्दै, रमाउँदै मेलमिलापका साथ काम गर्दै थिए। उनीहरूले गर्मि मसममा निकै महेतत गरेर खाना बढुलेका थिए। जाडो मसममा काम गर्न कठिनाई हुने भएकाले, बरु गर्मि मसममा पसिना बगाएर भएपनि, खाना जम्मा गरेका थिए।

त्यतिकैमा त्यहाँ एक फट्याडग्री आइपुग्यो र बिनम्र भएर कमिलाहरूलाई सहयोग मागे।

“तिभिहरूसंग भएकौं खाना बाह्र, अलिकति मलाई पनि देउन फट्याडग्रीले भयो। कमिलाले पनि जबाफ दियो, “हामीले त यो खानाहरु निकै परिश्रम गरेर जम्मा गरेका छौं।

तिमीले आफ्नु लागि खान जम्मा गरेनौं र?

गर्मि मसम भएर के गरेर बसेउ र?”

फट्याडग्रीले जबाफ दियो, “म त

गर्मि मसमका समयमा मस्त





गिन गाँउँई, खौँई बसे । मनाई काम गने फुसीदने भइन ।

गिन गाँउँदा गाँउँई गरमिके समय बितिसकेछ ,

थाएने भइन ।”

कमिनाले पनि उस्ने जबाफ दिउ , “ हो , गिन

गाइर बसेउ होइन त, अब नार्चेर बस । हामि

जिसीलाई केहि पनि दिने छैन ।” त्यति भनेर

कमिनाहरू फेरी आफ्नो काममा लागे ।

कहिँ बाट पनि खान नमिलेसी बल फल्यारुगोले समयको महल बयो ।

कथाको पाठ : समयलाई ध्यानमा राख्नुपर्छ । काम
गने समयमा काम गर्नुपर्छ र खैले समयमा
खैल्नुपर्छ ।

At

10

the

ঘাসমগড়িঃ এবং পিঁপড়া

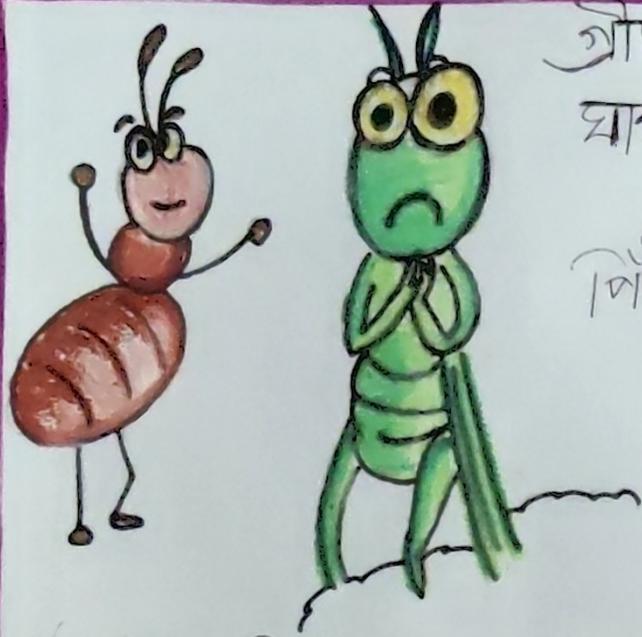
গ্রীষ্মের এক চমৎকার দিনে ঘাসমগড়িঃ নাচুর উপর বসে মনের আনন্দে গান গাচ্ছিল। হঠাৎ সে দেখতে পেল একটি পিঁপড়ে অনেক কষ্ট করে খাবার বয়ে নিয়ে যাচ্ছে। ঘাসমগড়িঃ পিঁপড়াকে বলল, "এতো কষ্ট করছো কেন ভাই? এসো আমরা খেলা করি, গান গাই, আর নাচি।"

'ভালোকে এখন ক্ষীণের জন্য খাবার সংগ্রহ করে রাখতে হবে। খুশি ও স্নায়ু নষ্ট না করে খাবার সংগ্রহ করে রাখো বন্ধু'-পিঁপড়া বলল।

আর ক্ষীণমল আসতে যে অনেক দেরি, ওসব নিয়ে চিন্তা করোনা'- ঘাসমগড়িঃ বলল।

পিঁপড়ে কোনো কথা না বলে খাবার নিয়ে তার বাড়ির দিকে রওনা হল।





গোপন শ্রেণীতে আস্ত এলো জাঁকিয়ে। দুর্ভাগ্য বগতর
স্বাস্থ্যমণ্ডিৎ কাঁপতে কাঁপতে পিঁপড়ার বাড়ি পৌঁছলো।
'আমায় কিছু খেতে দেবে জই।' স্বাস্থ্যমণ্ডিৎ
পিঁপড়াকে বলল।

'হুম্মি যদি কোনদিন আমার কথা শুনতে তাহলে
আজ তোমাকে দুর্ভাগ্য কষ্টে পোতে হতো না।
পিঁপড়া স্বাস্থ্যমণ্ডিৎ কে বলল এবং তার থেকে
কিছু খাবার স্বাস্থ্যমণ্ডিৎ কে খেতে দিল।

উপদেশ: বিনদের কথা ভেবে প্রস্তুতি নিয়ে
রাখা হৃদ্বিমানে কঙ্গ।



GROUP MEMBERS - Group No: 5

1. Swapnali Gayan , Roll No: 04
2. Nayanmoni Monan, Roll No: 52
3. Sangita Gogoi , Roll No: 43
4. Shyamoli Bose , Roll No: 23
5. Srujini Chetia , Roll No: 24
6. Manab Rajkhowa, Roll No: 28